कक्षा - नौवीं

पाठ - 3 (कृतिका)

रीढ़ की हड्डी

प्र० 1 रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर "एक हमारा जमाना था ..." कहकर अपने साथ की तुलना वर्तमान समय से करते हैं इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्क संमत है।

उ० रामस्वरूप और गोपाल पुरानी पीढी का प्रति निधित्व करते हैं उन्हें अपना पुराना जमाना ही अच्छा प्रतीत होता है इसी ही कारण वह बात-बात पर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं. हमारी दृष्टि से यह तुलना बिल्कुल भी ठीक नहीं है. क्योंकि समय परिवर्तनशील है इसलिए कभी भी एक स्थिति या एक बात स्थिर नहीं रह सकती, उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है हमें इस परिवर्तन को स्वीकार कर लेना चाहिए।

प्र० 2 रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?

उ० रामस्वरूप ने अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाई परंतु उसके विवाह के लिए उसे छिपाना उसकी मजबूरी है क्योंकि लड़की के पिता को लड़के और उसके पिता की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता है। गोपाल प्रसाद उच्च शिक्षित बहू नहीं चाहते थे और रामस्वरूप उनके लड़के से अपनी बेटी का रिश्ता तय करना चाहता है, इसी कारण वह अपनी बेटी की उच्च शिक्षा को छिपाते हैं लेकिन वह विवशतावश ऐसा करता है।

प्र० 3 अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है ?

उ० अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप अपनी बेटी उमा से इस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे थे कि वह सीधी-सादी चुप रहने वाली तथा कम पढ़ी लिखी लगने वाली लड़की की तरह व्यवहार करे लेकिन उनका ऐसा सोचना उचित नहीं, क्योंकि लड़की भेड़-बकरी मेज-कुर्सी नहीं है। उसके अंदर भी दिल होता है। उसका उच्च शिक्षा पाना कोई अपराध नहीं है, इसलिए वह पढ़ी-लिखी लड़की जैसा ही व्यवहार करेगी।

प्र० 4 गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप उमा की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं ? अपने विचार लिखें।

उ० हाँ, गोपाल प्रसाद और रामस्वरूप दोनों ही समान रूप से अपराधी है। गोपाल प्रसाद तो विवाह की पवित्रता को ही नहीं समझते और वे इसे 'बिजनेस' कि तरह लेते हैं तथा सौदा तय करने से पहले तरह-तरह की जांच पड़ताल करते हैं।

रामस्वरूप अपनी बेटी उमा को उच्च शिक्षा तो दिलवाते हैं। परंतु उसे लड़के वालों से छिपाते हैं। बेशक यह उनकी मजबूरी है। हमारी दृष्टि से उन्हें ऐसी जगह रिश्ता तय करने का प्रयास ही नहीं करना चाहिए था। जहाँ लड़की की शिक्षा की कद्र नहीं होती लेकिन जब किसी बात को छिपाया जाता है तब वह गलत हो जाती है। अपनी बेटी को शिक्षा दिलवाकर रामस्वरूप ने कोई अपराध नहीं किया है। वे व्यर्थ ही अपराध भावना से ग्रस्त है।

प्र० 5 "आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं....." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है ?

उ० "... आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नही..." उमा के इस कथन के माध्यम से शंकर की दो कमियों की ओर संकेत होता है :-

1 शंकर चरित्रहीन युवक है उस चरित्रक दृढ़ता का न होना रीढ़ हीन सिद्ध करने के लिए प्रयाप्त है।

2 शंकर शरीरिक दृष्टि से भी अत्यंत कमजोर है वह सीधा तन कर बैठ भी नही सकता वह अकसर बीमार रहता है।

प्र० 6 शंकर जैसे लडके या उमा जैसी लडकी - समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उ० समाज को उमा जैसे व्यक्तित्व की जरूरत है। उमा के व्यक्तित्व मे साहस है वह स्पष्ट वक्ता है वह समाज के तथा तथाकथित ठेकेदारों की कलई खोल सकती है और उन्हें आईना दिखा सकती है वह पढ़ी - लिखी और समझदार लडकी है। शंकर चरित्र हीन, किसम का डब्बू व्यक्तित्व वाला एवं शारीरिक रूप में असक्षम है। उसका व्यक्तित्व बहुत उपेक्षणीय समाज को उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

प्र० 7 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उ० इस एकांकी का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है यह सार्थक भी है। शरीर में रीढ़ की हड्डी का महत्तवपूर्ण स्थान है। यह उसे सीधा रखती है। यही दशा समाज की भी है। शंकर जैसे युवक रीढ़ -विहीन है उनका अपना कुछ भी व्यक्तित्व नहीं है। वे चरित्रहीन तथा दूसरों के ईशारे पर चलते हैं। ऐसा लगता है कि उनकी रीढ़ की हड्डी है ही नहीं तभी उसे बैक- बोन बिना कहा जाता है

यह शीर्षक एकांकी की भावना को व्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ है, अतः सार्थक है।

प्र० 8 कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उ० कथा वस्तु के आधार पर हम उमा को इस एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं। इसका मुख्य कारण है कि इसी पात्र के माध्यम से लेखक अपनी बात कहता है। उमा द्वारा व्यक्त विचार लेखक के अपने है। उमा अपने सशक्त व्यक्तित्व का परिचय देकर अन्य सभी पात्रों पर भारी पड़ती है। कथा वस्तु का सारा आयोजन उसी के लिए होता है। वह कथा की वह केन्द्रीय धुरी है जिसके इर्द-गिर्द समस्त कथा चक्र घूमता है।

प्र० 9 एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उ० एकांकी के आधार पर दोनों की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार है :-

1 रामस्वरूप = यह लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा दिलाने का पक्ष पाती है। वह अपनी पत्नी के विरोध के बावजूद अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलाता है पर उसे छिपाना उसकी विवशता है।
रामस्वरूप दब्बू किसम स्वभाव का व्यक्तित्व है। उसमें साहस की कमी है, इसलिए वह गोपाल प्रसाद की हाँ में हाँ मिलाते है।

2 गोपाल प्रसाद = यह बहुत चालाक व्यक्ति है। इसकी कथनी और करनी में बहुत अंतर है। यह विवाह को बिजनेस मानता है। यह अपने पुत्र की कमी पर पर्दा डालने का प्रयास करता है। यह सच्चाई सुन नहीं पाता और यह पुरानी मान्यताओं में विश्वास रखता है। हाँ यह तर्क

शील अवश्य है। तभी तो यह कहता है : मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं। शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

प्र० 10 इस एकांकी का क्या उद्देश्य है?

उ० इस एकांकी का उद्देश्य विवाह के योग्य लड़कियों की आवाज को बुलंद करना है। यह उन लोगों की कलाई खोलती है जो लड़कियों को भेड़-बकरी, मेज-कुर्सी मानते हैं। यह एकांकी लड़कियों के स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का पर्दाफाश करती है और चरित्रहीन युवकों को यह एकांकी रीढ़ हीन बताती है।

प्र० 11 समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

उ० समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं :-

1 समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के उचित प्रतिनिधित्व के लिए संघर्ष कर सकते हैं।

2 घर परिवार तथा समाज में महिलाओं का उचित सम्मान दिला सकते हैं।

3 उन्हें सम्पत्ति में उनका एक हक दिलाकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

4 लड़कियों का विवाह बिना दहेज लिए-दिए कर सकते हैं।